जपु जी साहिब

१ओं सति नामु करता पुरखु

(एक ओंकार) (सत्य)

निरभउ निरैवारु अकाल मूरति

अजूनी सैभं गुरप्रसादि ।।

।। जपु ।।

आदि सचु जुगादि सचु ।।

है भी सचु नानक होसी भी

सचु ।। १ ।।

सोचै सोचि न होवई

जे सोची लख वार ।।

चुपै चुप न होवई

जे लाइ रहा लिव तार ।

(लाय)

भुखिआ भुख न उतरी

(भुखया)

जे बंना पुरीआ भार ।।

(पुरिया)

सहस सिआणपा लख होहि

(स्याणपा) (होएं)

त इक न चलै नालि ।।

किव सचिआरा होईऐ

(सचयारा) (होइये)

किव कूड़ै तुटे पालि ।।

हुकमि रजाई चलणा

नानक लिखिआ नालि ।। १ ।।

(लिखया)

हुकमी होवनि आकार

हुकमु न कहिआ जाई ।।

(कहिया)

हुकमी होवनि जीअ

(जीऽ...ऽ)

हुकमि मिलै वडिआई ।।

(वडयाई)

हुकमी उतमु नीचु

हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ।।

(पाइयें)

इकना हुकमी बखसीस

इकि हुकमी सदा भवाईअहि ।।

(भवाइयें)

हुकमै अंदरि सभु को

बाहरि हुकम न कोइ ।।

(कोय)

नानक हुकमै जे बुझै
त हउमै कहै न कोइ ।। २ ।।

(कोय)

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ।।
गावै को दाति जाणै नीसाणु ।।
गावै को गुण वडिआईआ चार ।।

(वडियाइयां)

गावै को विदिआ विखमु वीचारु ।।

(विद्या)

गावै को साजि करे तनु खेह ।।
गावै को जीअ लै फिरि देह ।।

(जीऽ...ऽ)

गावै को जापै दिसै दूरि ।।
गावै को वेखै हादरा हदूरि ।।

कथना कथी न आवै तोटि ।।
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ।।
देदा दे लैदे थकि पाहि ।।

(पाएं)

जुगा जुगंतरि खाही खाहि ।।

(खाएं)

हुकमी हुकमु चलाए राहु ।।
नानक विगसै वेपरवाहु ।। ३ ।।
साचा साहिबु साचु नाइ

(नाय)

भाखिआ भाव अपारु ।।

(भारवया)

आखहि मंगहि देहि देहि

(आखें) (मंगें)

दाति करे दातारु ।।

फेरि कि अगै रखीऐ

(रखिये)

जितु दिसै दरबारु ।।

मुहौ कि बोलणु बोलीऐ

(बोलिये)

जितु सुणि धरे पिआरु ।।

(प्यार)

अम्रित बेला सचु नाउ

(अमृत) (नाव)

वडिआई वीचारु ।।

(वडयाई)

करमी आवै कपड़ा

नदरी मोखु दुआरु ।।

(द्वार)

नानक एवै जाणीऐ

(जाणिये)

सभु आपे सचिआरु ।। ४ ।।

(सचयार)

थापिआ न जाइ कीता न होइ ।।

(थापया) (जाय) (होय)

आपे आपि निरंजनु सोइ ।।

(सोय)

जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ।।

(सेवया) (पाया)

नानक गावीऐ गुणी निधानु ।।

(गाविये)

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ।।

(गाविये) (सुणिये) (रखीऐ)

दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ।।

(जाय)

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं
गुरमुखि रहिआ समाई ।।

(रहया)

गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा
गुरु पारबती माई ।।
जे हउ जाणा आखा नाही
कहणा कथनु न जाई ।।
गुरा इक देहि बुझाई ।।

(देएं)

सभना जीआ का इकु दाता

(जीऽ...ऽ)

सो मै विसरि न जाई ।। ५ ।।
तीरथि नावा जे तिसु भावा

विणु भाणे कि नाइ करी ।।

(नाय)

जेती सिरठि उपाई वेखा

विणु करमा कि मिलै लई ।।

मति विचि रतन जवाहर माणिक

जे इक गुर की सिख सुणी ।।

गुरा इक देहि बुझाई ।।

(देएं)

सभना जीआ का इकु दाता

(जिया)

सो मै विसरि न जाई ।। ६ ।।

जे जुग चारे आरजा

होर दसूणी होइ ।।

(होय)

नवा खंडा विचि जाणीऐ

(जाणिये)

नालि चलै सभु कोइ ।।

(कोय)

चंगा नाउ रखाइ कै

(नाव) (रखाय)

जसु कीरति जगि लेइ ।।

(लेय)

जे तिसु नदरि न आवई

त वात न पुछै के ।।

कीटा अंदरि कीटु

करि दोसी दोसु धरे ।।

नानक निरगुणि गुणु करे

गुणवंतिआ गुणु दे ।।

(गुणवंतया)

तेहा कोइ न सुझई

(कोय)

जि तिसु गुणु कोइ करे ।। ७ ।।

(कोय)

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ।।

(सुणये)

सुणिऐ धरति धवल आकाश ।।

(सुणये)

सुणिऐ दीप लोअ पाताल ।।

(सुणये)

सुणिऐ पोहि न सकै कालु ।।

(सुणये) (पोयं)

नानक भगता सदा विगासु ।।

सुणिऐ दूख पाप का नासु ।। ८ ।।

(सुणये)

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ।।

(सुणये)

सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ।।

(सुणये)

सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ।।

(सुणये)

सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ।।

(सुणये)

नानक भगता सदा विगासु ।।

सुणिऐ दूख पाप का नासु ।। ९ ।।

(सुणये)

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ।।

(सुणये) (ग्यान)

सुणिऐ अठसठि का इसनानु ।।

(सुणये)

सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ।।

(सुणये) (पावें)

सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ।।

(सुणये) (ध्यान)

नानक भगता सदा विगासु ।।

सुणिऐ दूख पाप का नासु ।। १० ।।

(सुणये)

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ।।

(सुणये)

सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ।।

(सुणये)

सुणिऐ अंधे पावहि राहु ।।

(सुणये) (पावें)

सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ।।

(सुणये)

नानक भगता सदा विगासु ।।
सुणिऐ दूख पाप का नासु ।। ११ ।।

(सुणये)

मंने की गति कही न जाइ ।।

(जाय)

जे को कहै पिछै पछुताइ ।।

(पछुताय)

कागदि कलम न लिखणहारु ।।
मंने का बहि करनि वीचारु ।।

(बेएं)

ऐसा नामु निरंजनु होइ ।।

(होय)

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।। १२ ।।

(कोय)

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ।।

मंनै सगल भवण की सुधि ।।
मंनै मुहि चोटा ना खाइ ।।

(मुएं) (खाय)

मंनै जम कै साथि न जाइ ।।

(जाय)

ऐसा नामु निरंजनु होइ ।।

(होय)

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।। १३ ।।

(कोय)

मंनै मारगि ठाक न पाइ ।।

(पाय)

मंनै पति सिउ परगटु जाइ ।।

(स्यों) (जाय)

मंनै मगु न चलै पंथु ।।
मंनै धरम सेती सनबंधु ।।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ।।

(होय)

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।। १४।।

(कोय)

मंनै पावहि मोखु दुआरु ।।

(पावें) (द्वार)

मंनै परवारै साधारु ।।

मंनै तरै तारे गुरु सिख ।।

मंनै नानक भवहि न भिख ।।

(भवें)

ऐसा नामु निरंजनु होइ ।।

(होय)

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।। १५ ।।

(कोय)

पंच परवाण पंच परधानु ।।

पंचे पावहि दरगहि मानु ।।

(पावें) (दरगें)

पंचे सोहहि दरि राजानु ।।

(सोहें)

पंचा का गुरु एकु धिआनु ।।

(ध्यान)

जे को कहै करै वीचारु ।।

(जे)

करते कै करणै नाही सुमारु ।।

धौलु धरमु दइआ का पूतु ।।

(दया)

संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ।।

(रखवया)

जे को बुझै होवै सचिआरु ।।

(सचयार)

धवलै उपरि केता भारु ।।
धरती होरु परै होरु होरु ।।
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ।।
जीअ जाति रंगा के नाव ।।
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ।।

(लिखवया)

एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ।।

(कोय)

लेखा लिखिआ केता होइ ।।

(लिखवया) (होय)

केता ताणु सुआलिहु रुपु ।।

(स्वालिहु)

केती दाति जाणै कौणु कूतु ।।
कीता पसाउ एको कवाउ ।।

(पसाव) (कवाव)

तिस ते होए लख दरीआउ ।।

(दरियाव)

कुदरति कवण कहा वीचारु ।।
वारिआ न जावा एक वार ।।

(वारया)

जो तुधु भावै साई भली कार ।।
तू सदा सलामति निरंकार ।। १६ ।।
असंख जप असंख भाउ ।।

(भाव)

असंख पूजा असंख तप ताउ ।।

(ताव)

असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ।।
असंख जोग मनि रहहि उदास ।।

(रहें)

असंख भगत गुण गिआन वीचार ।।

(ग्यान)

असंख सती असंख दातार ।।

असंख सूर मुह भख सार ।।

असंख मोनि लिव लाइ तार ।।

कुदरति कवण कहा वीचारु ।।

वारिआ न जावा एक वार ।।

(वारया)

जो तुधु भावै साई भली कार ।।

तू सदा सलामति निरंकार ।। १७ ।।

असंख मूरख अंध घोर ।।

असंख चोर हरामखोर ।।

असंख अमर करि जाहि जोर ।।

(जाएं)

असंख गलवढ हतिआ कमाहि ।।

(हत्या) (कमाएं)

असंख पापी पापु करि जाहि ।।

(जाएं)

असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ।।

(कुडयार) (फिराएं)

असंख मलेछ मलु भखि खाहि ।।

(खाएं)

असंख निंदक सिरि करहि भारु ।।

(करें)

नानकु नीचु कहै वीचारु।।
वारिआ न जावा एक वार ।।

(वारया)

जो तुधु भावै साई भली कार।।
तू सदा सलामति निरंकार ।। १८ ।।

असंख नाव असंख थाव ।।
अगंम अगंम असंख लोअ ।।

असंख कहहि सिरि भारु होइ ।।

(कहें) (होय)

अखरी नामु अखरी सालाह ।।

अखरी गिआनु गीत गुण गाह ।।

(ग्यान)

अखरी लिखणु बोलणु बाणि ।।

अखरा सिरि संजोगु वखाणि ।।

जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ।।

(ऐं) (नाएँ)

जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ।।

(पाएं)

जेता कीता तेता नाउ ।।

(नाव)

विणु नावै नाही को थाउ ।।

(थाव)

कुदरति कवण कहा वीचारु ।।
वारिआ न जावा एक वार ।।

(वारया)

जो तुधु भावै साई भली कार ।।
तू सदा सलामति निरंकार ।। १९ ।।
भरीऐ हथु पैरु तनु देह ।।

(भरिये)

पाणी धोतै उतरसु खेह ।।
मूत पलीती कपड़ु होइ ।।

(होय)

दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ।।

(लइये) (धोय)

भरीऐ मति पापा कै संगि ।।

(भरिये)

ओहु धोपै नावै कै रंगि ।।

पुंनी पापी आखणु नाहि ।।

(नाएं)

करि करि करणा लिखि लै जाहु ।।

(जाओं)

आपे बीजि आपे ही खाहु ।।

(खाओं)

नानक हुकमी आवहु जाहु ।। २० ।।

(आवों) (जाओं)

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ।।

(दया)

जे को पावै तिल का मानु ।।

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ।।

(सुणया) (मनया) (भाव)

अंतरगति तीरथि मलि नाउ ।।

(नाव)

सभि गुण तेरे मै नाही होइ ।।

(होय)

विणु गुण कीते भगति न कोइ ।।

(कोय)

सुअसति आथि बाणी बरमाउ ।।

(स्वसत्य) (बरमाव)

सति सुहाणु सदा मनि चाउ ।।

(सत्य) (चाव)

कवणु सु वेला वखतु कवणु

कवण थिति कवणु वारु ।।

कवणि सि रुती माहु कवणु

जितु होआ आकारु ।।

वेल न पाईआ पंडती

(पाइया)

जि होवै लेखु पुराणु ।।
वखतु न पाइओ कादीआ

(पायो) (कादिया)

जि लिखनि लेखु कुराणु ।।
थिति वारु ना जोगी जाणै
रुति माहु ना कोई ।।
जा करता सिरठी कउ साजे

(कों)

आपे जाणै सोई ।।
किव करि आखा किव सालाही
किउ वरनी किव जाणा ।।

(क्यों)

नानक आखणि सभु को आखै

इक दू इकु सिआणा ।।

(स्याणा)

वडा साहिबु वडी नाई
कीता जा का होवै ।।
नानक जे को आपौ जाणै
अगै गइआ न सोहै ।। २१ ।।

(गया)

पाताला पाताल लख
आगासा आगास ।।
ओड़क ओड़क भालि थके
वेद कहनि इक वात ।।
सहस अठारह कहनि कतेबा
असुलू इकु धातु ।।

लेखा होइ त लिखीऐ

(होय) (लिखिये)

लेखै होइ विणासु ।।

(होय)

नानक वडा आखीऐ

(आखियें)

आपे जाणै आपु ।। २२ ।।

सालाही सालाहि

(सालाएं)

एती सुरति न पाईआ ।।

(पाइया)

नदीआ अतै वाह

(नदिया)

पवहि समुंदि न जाणीअहि ।।

(पवें) (जाणियें)

समुंद साह सुलतान
गिरहा सेती मालु धनु ।।
कीड़ी तुलि न होवनी
जे तिसु मनहु न वीसरहि ।। २३ ।।

(मनों) (वीसरें)

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ।।
अंतु न करणै देणि न अंतु ।।
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ।।
अंतु न जापै किआ मनि मंतु ।।

(क्या)

अंतु न जापै कीता आकारु ।।
अंतु न जापै पारावारु ।।
अंतु कारणि केते बिललाहि ।।

(बिल्लाएं)

ता के अंत न पाए जाहि ।।

(जाएं)

एहु अंतु न जाणै कोइ ।।

(कोय)

बहुता कहीऐ बहुता होइ ।।

(कहिये) (होय)

वडा साहिबु ऊचा थाउ ।।

(थाव)

ऊचे उपरि ऊचा नाउ ।।

(नाव)

एवडु ऊचा होवै कोइ ।।

(कोय)

तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ।।

(कों) (सोय)

जेवडु आपि जाणै आपि आपि ।।

नानक नदरी करमी दाति ।। २४ ।।

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ।।

(लिखवया) (जाय)

वडा दाता तिलु न तमाइ ।।

केते मंगहि जोध अपार ।।

(मंगें)

केतिआ गणत नही वीचारु ।।

(केतया)

केते खपि तुटहि वेकार ।।

(तुटें)

केते लै लै मुकरु पाहि ।।

(पाएं)

केते मूरख खाही खाहि ।।

(खाएं)

केतिआ दूख भूख सद मार ।।

(केतया)

एहि भि दाति तेरी दातार ।।

(ऐं)

बंदि खलासी भाणै होइ ।।

(होय)

होरु आखि न सकै कोइ ।।

(कोय)

जे को खाइकु आखणि पाइ ।।

(पाय)

ओहु जाणै जेतिआ मुहि खाइ ।।

(जेतया) (मुएं) (खाय)

आपे जाणै आपे देइ ।।

आखहि सि भि केई केइ ।।

(आखें) (केय)

जिस नो बखसे सिफति सालाह ।।
नानक पातिसाही पातिसाहु ।। २५ ।।

अमुल गुण अमुल वापार ।।
अमुल वापारीए अमुल भंडार।।

(वापारिय)

अमुल आवहि अमुल लै जाहि ।।

(आवें) (जाएं)

अमुल भाइ अमुला समाहि ।।

(भाय) (समाएं)

अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ।।
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ।।
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ।।
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ।।
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ।।

(आखया) (जाय)

आखि आखि रहे लिव लाइ ।।

(लाय)

आखहि वेद पाठ पुराण ।।

(आखें)

आखहि पड़े करहि वखिआण ।।

(आखें) (करें) (वखयाण)

आखहि बरमे आखहि इंद ।।

(आखें) (आखें)

आखहि गोपी तै गोविंद ।।

(आखें)

आखहि ईसर आखहि सिध ।।

(आखें) (आखें)

आखहि केते कीते बुध ।।

(आखें)

आखहि दानव आखहि देव ।।

(आखवें) (आखवें)

आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ।।

(आखवें)

केते आखहि आखणि पाहि ।।

(आखवें) (पाएं)

केते कहि कहि उठि उठि जाहि ।।

(कें) (कें) (जाएं)

एते कीते होरि करहि ।।

(करें)

ता आखि न सकहि केई केइ ।।

(सकें) (केय)

जेवडु भावै तेवडु होइ ।।

(होय)

नानक जाणै साचा सोइ ।।

(सोय)

जे को आखै बोलु विगाड़ु ।।

ता लिखीऐ

(लिखिये)

सिरि गावारा गावारु ।। २६ ।।

सो दरु केहा सो घरु केहा

जितु बहि सरब समाले ।।

(बें)

बाजे नाद अनेक असंखा

केते वावणहारे ।।

केते राग परी सिउ कहीअनि

(स्यों)

केते गावणहारे ।।

गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु

(गावें)

गावै राजा धरमु दुआरे ।।

(द्वारे)

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि

(गावें)

लिखि लिखि धरमु वीचारे ।।

गावहि ईसरु बरमा देवी

(गावें)

सोहनि सदा सवारे ।।

गावहि इंद इदासणि बैठे

(गावें)

देवतिआ दरि नाले ।।

(देवतया)

गावहि सिध समाधी अंदरि

(गावें)

गावनि साध विचारे ।।

(गावें)

गावनि जती सती संतोखी

(गावें)

गावहि वीर करारे ।।

(गावें)

गावनि पंडित पड़नि रखीसर

जुगु जुगु वेदा नाले ।।

गावहि मोहणीआ मनु मोहनि

(गावें) (मोहणिया)

सुरगा मछ पइआले ।।

(पयाले)

गावनि रतन उपाए तेरे

अठसठि तीरथ नाले ।।
गावहि जोध महाबल सूरा

(गावें)

गावहि खाणी चारे ।।

(गावें)

गावहि खंड मंडल वरभंडा

(गावें)

करि करि रखे धारे ।।
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि

(गावें)

रते तेरे भगत रसाले ।।
होरि केते गावनि
से मै चिति न आवनि
नानकु किआ वीचारे ।।

(क्या)

सोई सोई सदा सचु
साहिबु साचा साची नाई ।।
है भी होसी जाइ न जासी

(जाय)

रचना जिनि रचाई ।।
रंगी रंगी भाती करि करि
जिनसी माइआ जिनि उपाई ।।

(माया)

करि करि वेखै कीता आपणा
जिव तिस दी वडिआई ।।

(वडयाई)

जो तिसु भावै सोई करसी
हुकमु न करणा जाई ।।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु
नानक रहणु रजाई ।। २७ ।।

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली
धिआन की करहि बिभूति ।।

(ध्यान) (करें)

खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति

(क्वारी) (काया)

डंडा परतीति ।।

आई पंथी सगल जमाती

मनि जीतै जगु जीतु ।।

आदेसु तिसै आदेसु ।।

आदि अनीलु अनादि अनाहति

जुगु जुगु एको वेसु ।। २८ ।।

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि

(ग्यान) (दया)

घटि घटि वाजहि नाद ।।

(वाजें)

आपि नाथु नाथी सभ जा की

रिधि सिधि अवरा साद ।।

संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि

(दुय) (चलावें)

लेखे आवहि भाग ।।

(आवें)

आदेसु तिसै आदेसु ।।

आदि अनीलु अनादि अनाहति

जुगु जुगु एको वेसु ।। २९ ।।

एका माई जुगति विआई

(व्याई)

तिनि चेले परवाणु ।।

इकु संसारी इकु भंडारी

इकु लाए दीबाणु ।।
जिव तिसु भावै तिवै चलावै
जिव होवै फुरमाणु ।।
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै

(औं)

बहुता एहु विडाणु ।।

(एओं)

आदेसु तिसै आदेसु ।।
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु ।। ३० ।।
आसणु लोइ लोइ भंडार ।।

(लोय) (लोय)

जो किछु पाइआ सु एका वार ।।

(पाया)

करि करि वेखै सिरजणहारु ।।

नानक सचे की साची कार ।।
आदेसु तिसै आदेसु ।।
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु ।। ३१ ।।
इक दू जीभौ लख होहि

(होएं)

लख होवहि लख वीस ।।

(होवें)

लखु लखु गेड़ा आखीअहि

(आखियें)

एकु नामु जगदीस ।।
एतु राहि पति पवड़ीआ

(राएं) (पवडिया)

चड़ीऐ होइ इकीस ।।

(चड़िये) (होय)

सुणि गला आकास की
कीटा आई रीस ।।
नानक नदरी पाईऐ

(पाइये)

कूड़ी कूड़ै ठीस ।। ३२ ।।
आखणि जोरु चुपै नह जोरु ।।
जोरु न मंगणि देणि न जोरु ।।
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु।।
जोरु न राजि मालि मनि सोरु ।।
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि।।

(ग्यानि)

जोरु न जुगती छुटै संसारु ।।
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ।।

(सोय)

नानक उतमु नीचु न कोइ।।३३।।

(कोय)

राती रुती थिती वार ।।

पवण पाणी अगनी पाताल ।।

तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल ।।

तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ।।

तिन के नाम अनेक अनंत ।।

करमी करमी होइ वीचारु ।।

(होय)

सचा आपि सचा दरबारु ।।

तिथै सोहनि पंच परवाणु ।।

नदरी करमि पवै नीसाणु ।।

कच पकाई ओथै पाइ ।।

(पाय)

नानक गइआ जापै जाइ ।। ३४ ।।

(गया) (जाय)

धरम खंड का एहो धरमु ।।

गिआन खंड का आखहु करमु ।।

(ग्यान) (आखों)

केते पवण पाणी वैसंतर

केते कान महेस ।।

केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि

(घड़िये)

रूप रंग के वेस ।।

केतीआ करम भूमी मेर केते

(केतिया)

केते धू उपदेस ।।

केते इंद चंद सूर केते

केते मंडल देस ।।

केते सिध बुध नाथ केते

केते देवी वेस ।।

केते देव दानव मुनि केते

केते रतन समुंद ।।

केतीआ खाणी केतीआ बाणी

(केतिया) (केतिया)

केते पात नरिंद ।।

केतीआ सुरती सेवक केते

(केतिया)

नानक अंतु न अंतु ।। ३५ ।।

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ।।

(ग्यान) (में) (ग्यान)

तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ।।

सरम खंड की बाणी रूपु ।।
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ।।

(घड़िये)

ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ।।

(किया) (कथिया) (जाएं)

जे को कहै पिछै पछुताइ ।।

(पछुताय)

तिथै घड़ीऐ

(घड़िये)

सुरति मति मनि बुधि ।।
तिथै घड़ीऐ

(घड़िये)

सुरा सिधा की सुधि ।। ३६ ।।
करम खंड की बाणी जोरु ।।
तिथै होरु न कोई होरु ।।

तिथै जोध महाबल सूर ।।
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ।।

(में) (रहया)

तिथै सीतो सीता महिमा माहि ।।

(माएं)

ता के रूप न कथने जाहि ।।

(जाएं)

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ।।

(ओएं) (मरें) (जाएं)

जिन कै रामु वसै मन माहि ।।

(माएं)

तिथै भगत वसहि के लोअ ।।

(वसें)

करहि अनंदु सचा मनि सोइ ।।

(करें) (सोय)

सच खंडि वसै निरंकारु ।।

करि करि वेखै नदरि निहाल ।।

तिथै खंड मंडल वरभंड ।।

जे को कथै त अंत न अंत ।।

तिथै लोअ लोअ आकार ।।

जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ।।

वेखै विगसै करि वीचारु ।।

नानक कथना करड़ा सारु ।। ३७ ।।

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ।।

(सुनयार)

अहरणि मति वेदु हथीआरु ।।

(हथियार)

भउ खला अगनि तप ताउ ।।

भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ।।

(भाव) (अमृत)

घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ।।

(घड़िये)

जिन कउ नदरि करमु

(कों)

तिन कार ।।

नानक नदरी नदरि निहाल ।। ३८ ।।

सलोकु ।।

(श्लोक)

पवणु गुरू पाणी पिता

माता धरति महतु ।।

(महत्व)

दिवसु राति दुइ दाई दइआ

(दुय) (दाया)

खेलै सगल जगतु ।।

चंगिआईआ बुरिआईआ

(चंगयाइया) (बुरयाइया)

वाचै धरमु हदुरि ।।

करमी आपो आपणी

के नेड़ै के दूरि ।।

जिनी नामु धिआइआ

(ध्याया)

गए मसकति घालि ।।

नानक ते मुख उजले

केती छुटी नालि ।। १ ।।

जपुजी साहिब के शब्दों का संधि–विच्छेद तथा गद्य अथवा पद्य में लिखने में अन्तर

१ओ = एक ओंकार - इक + ओ + अंकार

सति = सत्य - ि+ा = य

लाइ= लाय - इ = य

भुखिआ = भुखया - ि+अ = य

पुरीआ = पुरिया - ि+अ = य

सिआणपा = स्याणपा - ि+ा = य

होहि =होएं - ि=े, ह=ं

सचिआरा = सचयारा - ि+अ = य

होईऐ =होइये - इ+ऐ = इये

लिखिआ = लिखया - ि+अ = य

जीअ =जी ऽऽ - अ = ऽ+ऽ

पाईअहि = पाइयें - इ+अ = य, हि= एं

भवाईअहि = भवाइयें - इ+अ = य, हि= एं

कोइ = कोय - इ = य

वडिआईआ = वडयाइया - इे+अ = य

विदिआ= विद्या विद्या - इे+अ = य

पाहि =पाएं - ा = ए, ह

जीआ = जिया - ि + ा = य

पिआरु = प्यारु - ि+अ = य

बोलीऐ = बोलिये - ि+ये = ये

नाउ= नाव - ए = व

दुआरु = द्वारु - उ+अ = व

गुणवंतिआ = गुणवंतया - ि+अ = य

सुणिऐ = सुणये - ि+ऐ = ये

गिआनु = ग्यानु = ज्ञानु - ि+अ = य

धिआनु = ध्यानु - ि+अ = य

पावहि = पावें - ि=े+ह=ं

सिउ = स्यों - ि+ा = य, उ=ों

जीअ =जी S+S - S+S = अ

सुआलिहु = स्वाल्यों - ु+ा = व

कवाउ = क्वाव - उ = व

दरीआउ = दरियाव - उ = व

रहहि = रहें - ि=े, ह = ं

हतिआ = हत्या - ि+ा = य

सुअसति= स्वासत्य - ु+ा = व, ा+ि = य

किउ = क्यों - ा+उ = यो

किआ = क्या - ि+ा = य

कउ = कों - ों

वापारीए = वापारिये - ि+ए = ये

करेहि = करैं - ि=े, ह = ं

कहीअनि = कहियनि - ि+अ = य

पइआले = पयाले - इ+अ = य

कुआरी = क्वारी - उ+ा = व

विआई = व्याई - ि+ा = य

घड़ीअहि = घडियें - ि+अन्य ि=े

लोअ = लो s s - अ = s+s

महि = में - ि=े, ह = ं

चंगिआईआ = चंगयाइया - ि+ा = य

(समाप्त)